शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2013

छायावाद और महादेवी वर्मा की कविता

डा. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
तुलनात्मक भाषा एवं वाङ्मय विभाग,
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव

शोध संक्षेप

सन् 1918 से 1938 तक हिन्दी काव्य जगत पर छायावादी काव्य प्रवृत्ति छायी रही हैं। सामान्यतः दो महायुद्धों के बीच की कविता को छायावाद के नाम से अभिहित किया जाता है। उसका सामान्य अर्थ है- 'प्रस्तुत के स्थान पर अप्रस्तुत का कथन', उसकी बनावट में जिस तरह रवींद्र की कविता, अद्वैत दर्शन, मानवतावादी भूमिका आदि भिन्न-भिन्न काव्य आंदोलन तथा दर्शन कारणीभूत रहे हैं, उसी तरह अंग्रेजी के रोमान्टिसिजम काव्य का भी योगदान रहा है। परन्तु मूलतः छायावादी काव्य भारतीय सर्वात्मवाद तथा अद्वैतवाद से गहरे रूप में प्रभावित हुआ है। इसके अतिरिक्त उसपर रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, योगी अरविंद तथा गांधी दर्शन का भी पर्याप्त मात्रा में प्रभाव रहा है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में महादेवी काव्यकला पर पुनर्विचार किया गया है।

भूमिका

महादेवी वर्मा ने स्वयं छायावाद के संदर्भ में लिखा है "बुद्धि के सूक्ष्म धरातल पर कवि ने जीवन की अखंडता का भावन किया, हृदय की भाव भूमि पर उसने प्रकृति की बिखरी हुई सौंदर्य सत्ता की रहस्यमयी अनुभूति की, और दोनों के साथ स्वानुभूत सुख-दुखों को मिलाकर एक ऐसी काव्य सृष्टि उपस्थित कर दी, जो प्रकृतिवाद, छायावाद, रहस्यवाद, अध्यात्मवाद जैसे अनेक नामों का भार सँभाल सकी।"1 महादेवी वर्मा यह मानती हैं कि छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस संबंध में प्राण डाल दिये, जो प्राचीन काल से बिम्ब-प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था। जिसके कारण मनुष्य की प्रकृति अपने दुःख में उदात्त और सुख में पुलकित जान पडती थी। छायावाद की प्रकृति घट-कूप आदि में भरे जल की एकरूपता के समान अनेक रूपों में प्रकट एक महाप्राण बन गई। अतः अब मनुष्य के अश्रु मेघ के जलकण और पृथ्वी के ओस बिन्दुओं का एक ही कारण एक ही मूल्य है। छायावाद के चार मुख्य आधार स्तंभों में से एक महादेवी वर्मा हैं। छायावाद के साथ अन्य कवियों की तुलना में महादेवी अंत तक जुडी रही हैं। इस कारण छायावाद की लगभग सभी प्रवृत्तियों को उनके काव्य में देखा जा सकता है, जिनका निम्नलिखित पद्धतियों से विश्लेषण करना ही इस शोध आलेख का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

वैयक्तिकता

छायावाद की निर्मिती मूलतः स्व की अभिव्यक्ति के परिणाम स्वरूप हुई है। इस कारण वैयक्तिक चेतना यहां यत्र-तत्र-सर्वत्र दिखाई देती है। लेकिन इनका 'स्व' विश्वव्यापक है। इन्होंने दो दृष्टियों से प्रकृति वस्तु तथा अन्य व्यक्तियों को देखा है। डा. सूर्यनारायण राणसुभे के शब्दों में, 'एक अपनी अनुभूतियों का प्रभाव प्रकृति, वस्तु तथा उस व्यक्तियों पर और दूसरी वस्तु प्रकृति अथवा व्यक्ति का प्रभाव अपनी अनुभूतियों पर।"2 महादेवी वर्मा की काव्य रचनाओं नीहार, रश्मी, नीरजा, सांध्यगीत, यामा और दीपशिखा में आत्मतत्व की प्रधानता सर्वत्र है। उनकी प्रत्येक अनुभूति स्वानुभूत है, इससे उसमें वैयक्तितकता की गहरी छाप है। उनकी प्रथम कविता जिसने

सबको प्रभावित किया था उसमें वह कहती है,
'कितनी रातों की मैंने, नहलाई है आँधियारी,
धो डाली है संध्या के पीले, सेंन्दुर की सी लाली'
सौंदर्यबोध

छायावादी कवि प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। इन्होंने प्रकृति, नारी, मानव आदि रूपों में सौंदर्य की सफल अभिव्यक्ति की है। इनकी कविता में प्रकृति के बाह्य और अन्तरिक सौंदर्य के साथ-साथ लौकिक अलौकिक, ज्ञात-अज्ञात, प्रियतम और मानवीय सौन्दर्य के भिन्न रूपों का सुन्दर परिपाक हुआ है। गोचर सौन्दर्य में सूक्ष्मतर मन और चेतना के सौन्दर्य का निरूपण इनके सौंदर्य की विशेषता है। अनुराग भावना के संस्पर्श से वह और भी सजीव एवं धनीभूत हो उठा है। मिलन शीर्षक कविता में महादेवी ने प्रकृति की मधुमयी वीथिका में प्रियतम के दर्शन की कहानी बताई हैं-

रजत करों की मृदुल तूलिका, से ले तुहिन-बिन्दु सुकुमार,
कलियों पर जब आंक रहा था, करुणा कथा अपना संसार।"3

प्रकृति चित्रण

अन्य छायावादी कवियों की तरह महादेवी वर्मा ने भी स्वच्छन्द प्रेम और प्रकृति चित्रण को काव्य विषय के रूप में स्वीकार किया है। मनोभावों के सुन्दर प्रकाशन के लिए उन्होंने प्रकृति की सहायता ली है और उसके विस्तृत प्रांगण में उस असीम का दर्शन किया है। भगवतीचरण वर्मा के मतानुसार, "महादेवी के रहस्यवाद में प्रकृति के सुन्दर चित्र भी यथेष्ट संख्या में दिखते हैं। महादेवी जगत की करुणा के प्रति सदा से सचेत हैं। उनकी निम्न कविता में उनकी करुणा मूर्तिमंत हो उठती है-

"मेरे हंसते अधर नहीं, जग की आंसू लडियां देखो।
मेरे गीले पलक छूओ मत, मुर्झाई कलियां देखो।"4

सांध्यगीत के बाद दीपशिखा तक आते-आते उनके काव्य में तीन तत्वों की प्रधानता दृष्टिगोचर होती हैं- प्रकृतिवाद, वेदनावाद, रहस्यवाद इन तीनों के सम्मिश्रण से ही उनका काव्य ओतप्रोत है। डा. रामतन भटनागर लिखते हैं, "आधुनिक काव्य में भाषा भाव का ऐसा संतुलन, ऐसा सामंजस्य, ऐसा निर्वाह अन्यत्र नहीं मिलेगा। जहां भावना रहस्यवादी है, वहां यह संतुलन और सामंजस्य पाना और भी कठिन है। परंतु जहां रहस्यवादी भावना के साथ प्रकृति चित्र का भी मेल हो गया है वहां कवयित्री की कविता चित्रमय झंकार मात्र बन गई है, वहां कल्पना के ऐसे फूल खिलते हैं जो न इस लोक के हैं न उस लोक के हैं।"5

रहस्यवाद

महादेवी वर्मा की रहस्यभावना वैदिक वेदांत, अद्वैत, प्रेम और संत कवियों का मिला-जुला संगम है। जो अत्यंत स्वाभाविक एवं मर्मस्पर्शी बन पड़ा है। मध्ययुगीन संतों द्वारा बताई गई रहस्यवाद की सभी स्थितियां, उनके काव्य में व्याप्त हैं। अपने काव्य की प्रारंभिक व्याख्याओं में इन्होंने रहस्यवाद से दुःखवाद का संबंध नहीं जोड़ा है। परंतु 'नीहार' और 'रश्मि' की अनेक कविताएं किसी अज्ञात प्रियतम के मिलन-वियोग की भावना से आक्रांत हैं।

"मधुर मधुर मेरे दीपक जल, युगयुग प्रतिदिन प्रतिपल, प्रियतम का पथ आलेकित कर, सौरभ फैला विपुल धूप बना मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन"।

इन पक्तियों में कवयित्री ने किसी अज्ञात प्रियतम का ही पथ आलोकित किया है। महादेवी की वेदना प्रियता में उनकी रहस्यानुभूति की झलक मिलती है। इस कारण 'यामा' के मूक मिलन के कुछ यामों को छोड़कर सब विरह याम हैं। साहित्य में भावों की प्रधानता होती है ज्ञान की नहीं इस कारण उनके रहस्यवाद में भावों की प्रधानता कुशलता से व्यक्त हुई है-

"शूलों में नित पाटल सा, खिलने देना मेरा जीवन,
क्या हार बनेगा वह जिसने सीखा न हृदय को बिंधवाना।"6

वेदना और निराशा

महादेवी की प्रारंभिक रचनाओं की प्रेरणा वेदना, निराशा, एवं पीड़ा ही रही है। वेदना प्रियता के लिए उन्होंने यामा में अपनी भूमिका में लिखा है, "सुख और दुःख के धूंप-छांही डोरों से बुने हुए जीवन में मुझे केवल दुःख ही गिनते रहना क्यों इतना प्रिय है, यह बहुत लोगों के आश्चर्य का कारण हैं। इस क्यों का उत्तर दे सकना मेरे लिए भी किसी समस्या को सुलझाने से कम नहीं है। संसार जिसे दुःख एवं अभाव के नाम से जानता है वह मेरे पास नहीं है। जीवन में मुझे बहुत दुलार बहुत आदर और बहुत मात्रा में सबकुछ मिला है। कदाचित वह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी प्रिय लगी है। इस वेदना का कारण युग के नैराश्य पूर्ण जीवन का प्रभाव भी हो सकता है। और बौद्धों का करूणावाद भी",7 अपने अश्रु उन्हें इसलिए प्रिय हैं कि, वह उन्हें स्वजन समझती है-

"जन्म से यह साथ है, मैंने इन्हीं का प्यार जाना,
स्वजन ही समझा दृगों को, अश्रु को पानी न माना।"8

डा. शिवकुमार शर्माजी के मतानुसार, "महादेवी के काव्य में युगानुरूप वेदना की विवृत्ति हुई है। यह विवृत्ति कहीं पर अनन्त वेदना के रूप में हुई है तो कहीं पर करुणा में और कहीं पर निराशा के रूप में महादेवी के काव्य में अभिव्यक्त वेदना सेवावाद, मानवतावाद तथा अध्यात्म पर आधारित है।"9

प्रेमानुभूति

महादेवी का प्रेम अध्यात्मिक तथा अपार्थिव है, पर उनके प्रेम में एक सजीव मादक सुन्दरता है। उनकी निम्न कविता में उनका वह अपार्थिव प्रेम कितनी सफलता पूर्वक चित्रित है-

"तुम सो जाओ मैं गाऊं, मुझको सोते युग बीते।
तुमको यो लोरी गाते, अब आओ मैं पलकों में स्पप्नों से सेज बिछाऊं।"

अपनी विशेष पीड़ा को महादेवी त्यागना नहीं चाहती। डा. रामरतन भटनागर लिखते हैं कि, "महादेवी योग की कठिन कृच्छ साधना में विश्वास नहीं करतीं। उनकी साधना है प्रियतम का अधिका-अधिक नैकट्य, भावनाओं का अधिक प्रसार। वह साधना सूली की सेज पर सोना चाहती हैं। यह कोई सरल साधना नहीं है। अहंकार का नाश, व्यक्तित्व का नाश, प्रियतम के आत्मभाव का समर्पण। मीरा के काव्य और उनकी साधना में यही व्याकुल भावना बार-बार मिलती है।"10 प्रेमानुभूति में एक रस होने के कारण आत्मा अब अपने को किसी असीम सत्ता की बीन मात्र नहीं समझी वह उसकी प्रियसी बन जाती है। युगों-युगों तक प्रेम की रहस्य क्रीडा चलती रहती हैं।

कल्पनाशीलता

प्रत्येक काव्य के मूल में कल्पना होती है। महादेवी की कविता में भी स्थान पर कल्पना का

उहापोह और विचारों का असंतुलन इसी ओर संकेत करता है। स्वप्न और कल्पना से युक्त कवि के सुन्दर जगत में और संघर्ष से व्युक्त। वास्तविक जगत में कितना वैषम्य है, इसे बडी सुन्दरता के साथ व्यक्त किया है-

कह दे मां अब क्या देखूं। देखूं खिलती कलियां, या प्यासे सुख को, तेरी चिर यौवन सुषमा या जर्जर जीवन देखूं।

महादेवी की कविता में इस प्रकार सुन्दर कल्पना के साथ-साथ मन पर छा जाने वाला एक करुण संगीत भी भरा हैं- "मैं नीर भरी दुख बदली" यह उसका ज्वलंत उदाहरण हैं।

मानवतावाद

अन्य छायावादी कवियों की तरह महादेवी के काव्य में व्याप्त वैयक्तिक चेतना भी विश्वव्यापक एवं मानवतावादी है। अपनी करुणा में सब को समा लेती हैं। उनके रहस्यवाद का प्रथम स्वर यही विश्वव्यापक करुणा है। भगवतीचरण वर्मा के मतानुसार, "महादेवी की करुणा में रुदन नहीं, हाहाकार नहीं है, वह करुणा भौतिक नहीं, हमारे जीवन के संघर्ष में और निराशा में उस करुणा के बीज बोये हैं वह करुणा शांत और निर्मल जल प्रवाह की भांति है।"11

अद्वैतवाद:

'नीहार' से 'रश्मि' तक आते-आते महादेवी की अनुभूति अद्वैत के रूप में पल्लवित हुई है। कवयित्री सहसा कह उठती है- 'मैं तुम से हूं एक, एक है जैसे राशि प्रकाश"12 अर्थात जिस प्रकार राशि एवं प्रकाश को अलग करना असंभव है उसी प्रकार आत्मा एवं परमात्मा का है। महादेवी स्वयं को आत्मा समझकर ईश्वर को परमात्मा स्वरूप मानती हैं।

भाषा

महादेवी ने काव्य भाषा के लिए संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली को अपनाया है। जिसमें संगीत कोमलता, और माधुर्य की अनुपम त्रिवेणी हैं। भाषा में कहीं पर भी शुष्कता एवं शिथिलता नहीं है। सुंदर कोमल शब्दों का प्रयोग महादेवी की अपनी निराली विशेषता है। प्रतीकों और बिम्बों के माध्यम से भाषा को सजाया, संवारा है; फिर भी पुनरुक्ति तथा अश्लील तत्वों के कहीं पर भी दर्शन नहीं होते। गेयता, मधुरता, प्रतिकात्मकता एवं चित्रात्मकता आदि भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का भी सफल प्रयोग हुआ है। भाव और भाषा में सामंजस्य है। शैली प्रौढ़ है जिसमें लाक्षणिकता है। डा. रामरतन भटनागर लिखते हैं, "उनकी भाषा उनके भावों से बोझिल नहीं है उनके छंद भावों की ताल पर नर्तन करते हैं और उनके शब्द चित्र बन जाते हैं। आधुनिक काव्य में भाषा-भाव का ऐसा संतुलन ऐसा सांमजस्य ऐसा निर्वाह अन्यत्र नहीं मिलेगा।"13

संक्षेप में महादेवी के काव्य में साधना की पूर्णता के साथ संयम की संपूर्णता भी है। जिसके फलस्वरूप उनके काव्य में मानवीय साधना और आध्यात्मिक भावना की छाप है, जो आदिकाल से मुखर और चिंतनशील प्राणी के प्रगति की ओर बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करती है।

संदर्भ

1 प्रेमनारायण टंडन, हिन्दी कवियों का काव्य आदर्श, पृष्ठ 124
2 डा. सूर्यनारायण राणसुभे, आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 51
3 डा. रामरतन भटनागर, हिन्दी भारती, पृष्ठ 256-257
4 भगवती चरण वर्मा, ये सात और हम, पृष्ठ 77
5 डा. रामरतन भटनागर, हिन्दी भारती, पृष्ठ 260

6 महादेवी वर्मा, यामा, पृष्ठ 188, 7 भूमिका, 8 पृष्ठ 209
9 डा. शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियां, पृष्ठ 498
10 डा. रामरतन भटनागर, हिन्दी भारती, पृष्ठ 249
11 भगवती चरण वर्मा, ये सात और हम, पृष्ठ 68
12 महादेवी वर्मा, यामा, पृष्ठ 104
13 डा. रामरतन भटनागर, हिन्दी भारती, पृष्ठ 259